

नौकरी की किताब
सत्र 9: स्वर्ग में दृश्य, भाग 1
जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 9, स्वर्ग में दृश्य है। भाग ---
 - पहला।

स्वर्गीय परिषद [00:23-1:36]

अब अय्यूब की पुस्तक का दृश्य स्वर्गीय दरबार में बदल जाता है। यह दर्शकों का दिन है। यहोवा सभा कर रहा है, और उसकी दिव्य परिषद इकट्ठी हो रही है। परमेश्वर के पुत्र, जो परिषद के सदस्य हैं, अपनी रिपोर्ट देने के लिए उसके सामने आते हैं। जब परिषद के सदस्य रिपोर्ट बनाते हैं, तो इसका मतलब यह नहीं है कि ईश्वर सर्वज्ञ से कम है; यह सिर्फ इतना है कि भगवान ने परिषद के साथ काम करना चुना है। हमें वह चित्र बाइबल में कई स्थानों पर मिलता है 1 राजा 22, यहाँ अय्यूब, यशायाह 6 में, "मैं किसे भेजूँ, हमारे लिए कौन जाएगा?" भजन 82, और कई अन्य स्थान। यह वह तरीका है जिससे यह परमेश्वर के कार्यकलापों को प्रस्तुत करता है।
 ये अन्य देवता नहीं हैं, जैसे वे कुछ अन्य प्राचीन संस्कृतियों में हैं, क्योंकि वे एक दिव्य परिषद के बारे में सोचते हैं, फिर भी भगवान ने एक परिषद के माध्यम से काम करना चुना है। ईश्वर को अन्य प्राणियों की आवश्यकता नहीं है। उसे सलाह देने के लिए किसी की ज़रूरत नहीं है, लेकिन अगर वह इस तरह से काम करना चुनता है, तो यह उसका व्यवसाय है।

हसनतन का चरित्र [1:36-5:23]

तो, परमेश्वर के पुत्र इकट्ठे हुए हैं, और शैतान उनके बीच में है। अब, अगर हमने ऐसा कहा है, तो यह हमें थोड़ा भ्रमित करता है क्योंकि हम शैतान को बुरा आदमी, शैतान के रूप में सोचने के आदी हैं; जो स्वर्ग में भी नहीं है, परमेश्वर के पुत्रों में तो दूर की बात है। तो, आइए यहां सावधान रहें। ये किरदार आता है। कौन है ये? यह पाठ उसके बारे में शैतान के रूप में बात करने से एक कदम दूर है।

मैं जानता हूँ कि अधिकांश अनुवाद शैतान को बड़े अक्षर एस के साथ प्रस्तुत करते हैं और तुरंत हमें शैतान से जुड़े एक व्यक्तिगत नाम के बारे में सोचने पर मजबूर कर देते हैं। लेकिन यहां हिब्रू पाठ को व्यक्तिगत नाम के रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया है। यह उस पर एक निश्चित लेख डालता है। हिब्रू में, वह "हा" है। तो, यह हसातन है। शैतान एक हिब्रू शब्द है। आप नहीं जानते थे, और आप कुछ हिब्रू जानते थे। तो, यह हसातन, शैतान है। अब इसका मतलब यह है कि यह कोई व्यक्तिगत नाम नहीं है। और इसका वास्तव में मतलब यह है कि हमें निष्पक्ष रूप से इसका फायदा नहीं उठाना चाहिए। मेरा मतलब है, हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। बल्कि यह एक भूमिका का वर्णन करता है। शैतान, जैसा कि मैंने बताया, एक हिब्रू शब्द है। और यह एक ऐसा शब्द है जो क्रिया के साथ-साथ संज्ञा के रूप में भी कार्य कर सकता है। और हमें यह देखने की जरूरत है कि वह शब्द कैसे काम करता है।

जब यह एक क्रिया है, तो यह सुझाव देता है कि इसमें कुछ विरोध करना, विरोधी होना, किसी को चुनौती देना, इस तरह की सभी चीजें हैं। इसे इंसानों द्वारा किया जा सकता है, यानी, उदाहरण के लिए, सुलैमान को चुनौती देने वाले अन्य राजाओं द्वारा। यह अदालत में मौजूद लोगों, अभियोजन वकील द्वारा किया जा सकता है। यह प्रभु के दूत द्वारा भी किया जा सकता है जो संख्याओं में बालाम के आंदोलन को चुनौती देता है। 22, शैतान के रूप में उसके रास्ते में खड़ा है। इसलिए, इस भूमिका में आंतरिक रूप से कुछ भी बुरा नहीं है। हम मनुष्य को इस भूमिका में पाते हैं। हम ईश्वर के दूत जैसे गैर-मानव प्राणियों को भी पाते हैं जिनका मैंने उल्लेख किया है, जो उस विशेष मार्ग में इस कार्य को करते हैं।

और, निःसंदेह, यहाँ अय्यूब में यह विशेष चरित्र है। लेकिन यह चरित्र, यह चुनौती देने वाला, और यही वह शब्द है जिसे मैं पसंद करूंगा; यह चुनौती देने वाला परमेश्वर के पुत्रों में से है। वह दिव्य परिषद में है। उसे शैतान के रूप में चित्रित नहीं किया गया है।

वास्तव में, पुराने नियम में शैतान का प्रयोग शैतान का संकेत नहीं देता है। यह केवल गैर-मानव प्राणी पर लागू होता है, जैसे कि इस मामले में कुछ अन्य मामलों में। उनमें से एक जकर्याह अध्याय तीन में है, जिसमें वह विरोध करता है, वह महायाजक के बहाल होने के अधिकार को चुनौती देता है। यह एक उचित चुनौती है। भगवान उसे डांटते हैं और अपना निर्देश देते हैं कि ऐसा क्यों हो

सकता है। 1 इतिहास 21 में, यह शैतान को संदर्भित करता है, जो डेविड को जनगणना करने के लिए उकसाता है। और इसलिए, हमारे पास केवल ये दो घटनाएं हैं, जो प्रोफाइल बनाने के लिए मुश्किल से ही पर्याप्त हैं।

चैलेंजर [5:23-6:15]

लेकिन यहाँ वह स्वर्गीय सलाहकारों, परमेश्वर के पुत्रों में से एक है। यह विचार कि यह किसी ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करता है जो चुनौती देता है, चाहे संदर्भ कोई भी हो, चाहे अच्छे या बुरे के लिए, चाहे मनुष्यों के बीच या स्वर्गीय मेज़बान के बीच, यह वह व्यक्ति है जो चुनौती देता है, जो प्रतिकूल स्थिति लेता है, जो हम पाते हैं उसकी प्रोफाइल में फिट बैठता है शब्द।

जब तक हम पुराने नियम के दौर से बाहर नहीं निकल जाते, यह शैतान का व्यक्तिगत नाम नहीं बन जाता। स्यूडेपिग्राफल साहित्य में, वह साहित्य जो वसीयतनामा और उससे आगे के बीच के दूसरे मंदिर काल का है, वह सिर्फ एक को नहीं, बल्कि कई शैतानों को संदर्भित करता है। यह शैतान का व्यक्तिगत नाम नहीं है।

भगवान के एजेंट के रूप में चुनौती देने वाला [6:15-8:36]

यहां अय्यूब में हसातन, चुनौती देने वाला, ईश्वर का एजेंट है। उसे एक कार्य के साथ बाहर भेजा गया है। वह रिपोर्ट करने के लिए वापस आ रहा है। वह भगवान की इच्छा और भगवान के आदेश पर काम कर रहा है। वह भगवान का एजेंट है।

अब, वह एक चुनौती देने वाला कैसे है? खैर, यहाँ हम पाते हैं कि वह ईश्वर की नीतियों को चुनौती देता है। हम पहले ही इस बारे में बात कर चुके हैं। वह ऐसा उचित ढंग से करता है। अर्थात्, यह सत्य है कि यदि धर्मी लोगों को लाभ मिलता रहेगा, तो यह उनकी धार्मिकता को नष्ट कर सकता है और उन्हें एक गुप्त उद्देश्य प्रदान कर सकता है। यह सच है। यह कोई झूठा प्रचारित आरोप नहीं है।

और इसलिए, हम पाते हैं कि भगवान का यह एजेंट वह काम कर रहा है जो भगवान ने उसे करने के लिए दिया है। नौकरी उसका लक्ष्य नहीं है। परमेश्वर ही है जिसने अय्यूब को पाला। उनकी चुनौती

का लक्ष्य ईश्वर की नीतियाँ हैं। अय्यूब बस एक तार्किक परीक्षण मामला है क्योंकि वह परम ईमानदार व्यक्ति है। तो, उस अर्थ में, हमें चैलेंजर को शैतान प्रकार की भूमिका निभाने के बारे में सोचने की ज़रूरत नहीं है। वह आकर्षक नहीं है। वह कब्ज़ा नहीं कर रहा है। वह झूठ नहीं बोल रहा है। जब वह अय्यूब को बर्बाद कर देता है तो कोई शैतानी हंसी नहीं आती। वास्तव में, वह केवल परमेश्वर की ओर से कार्य करता है। भगवान उसे हाथ की स्वतंत्रता देते हैं, और भगवान अय्यूब को बर्बाद करने की जिम्मेदारी स्वीकार करते हैं। बाकी कहानी में किसी ने भी कभी कल्पना नहीं की कि अय्यूब की बर्बादी में कोई अन्य एजेंट भी शामिल है। यह भगवान ने ही किया है। अय्यूब द्वारा परमेश्वर को जवाबदेह ठहराया जा रहा है। ईश्वर को जिम्मेदार माना जाता है। परमेश्वर ने अय्यूब पर उतना ही प्रहार किया है जितना चुनौती देने वाले पर।

चुनौती देने वाले को दुष्ट के रूप में चित्रित नहीं किया गया [8:36-10:11]

और यह दिलचस्प है कि कभी-कभी हम सोचते हैं, जब हम चुनौती देने वाले को शैतान मानते हैं, तो हम उसके बारे में सोचते हैं कि वह बहुत आनंद ले रहा है और अय्यूब को बर्बाद कर रहा है। जबकि भगवान बड़े दुःख से इसका अनुभव करते हैं। पाठ इस बात में अंतर नहीं करता कि वे कैसे प्रतिक्रिया देते हैं। किसी भी पात्र में विशेष रूप से कोई कमी नहीं है या विशेष रूप से सहानुभूतिपूर्ण प्रतिक्रिया नहीं है। चुनौती देने वाला जो कुछ भी करता है, वह ईश्वर की शक्ति के माध्यम से करता है। और भगवान ऐसा कहते हैं, "आपने मुझे उसे बर्बाद करने के लिए उकसाया है," अध्याय 2। लेखक के चैलेंजर के चित्रण में आंतरिक रूप से कुछ भी बुरा नहीं उभरता है। वह एक तटस्थ चरित्र है जो वही कर रहा है जो उसका काम है। फिर, कोई प्रलोभन नहीं, कोई भ्रष्ट नहीं, कोई भ्रष्ट नहीं। यह कोई शैतान प्रोफ़ाइल नहीं है। यह एक स्वतंत्र प्रोफ़ाइल है जिसे हमें पाठ से ही प्राप्त करना है। तथ्य यह है कि भगवान का दूत स्वयं शैतान की भूमिका निभा सकता है, यह बताता है कि यह आंतरिक रूप से बुरा नहीं है।

एक साहित्यिक रचना के रूप में चैलेंजर [10:11-11:27]

चैलेंजर एक ऐसा चरित्र है जिसका उपयोग लेखक ने उन तरीकों से किया है जो इज़राइली दर्शकों द्वारा ज्ञात जानकारी के अनुरूप हैं। याद रखें, हमने इसके साहित्यिक निर्माण के बारे में बात की है, और इसलिए सभी पात्र बस ऐसे ही हैं, वे साहित्यिक पात्र हैं, एक भूमिका निभा रहे हैं, भले ही यह

वास्तव में वह अस्तित्व है जिसे नया नियम शैतान के रूप में नामित करता है। अय्यूब की पुस्तक की व्याख्या उस प्रोफ़ाइल के आधार पर की जानी चाहिए जो लक्षित दर्शकों के लिए इज़राइलियों के रूप में उपलब्ध थी, न कि बाद के ग्रीको-रोमन दर्शकों के लिए - न्यू टेस्टामेंट।

वास्तव में, चैलेंजर का पुस्तक में बहुत कम धार्मिक महत्व है। वह सिर्फ़ परिदृश्य तैयार करने में मदद करता है क्योंकि वह अय्यूब के इरादों पर सवाल उठाता है और भगवान की नीतियों को चुनौती देता है। उसे ऐसे व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया है जिसे अय्यूब की पीड़ा के लिए दोषी ठहराया जा सके। पुस्तक निश्चित रूप से यह सुझाव नहीं दे रही है कि जब हम पीड़ित हों तो हमें शैतान में दोष ढूँढ़ना चाहिए; वह किताब की शिक्षा नहीं है।

पुस्तक में लघु पात्र के रूप में चैलेंजर [11:27-12:30]

उनकी भूमिका हमारे अनुभवों या दुनिया में पीड़ा या बुराई के लिए स्पष्टीकरण प्रदान नहीं करती है। वह एक छोटा पात्र है जो सामने आने वाले नाटक में एक छोटी सी भूमिका निभा रहा है। और हम अपने जोखिम पर उस पर बहुत अधिक ध्यान देते हैं क्योंकि यह पुस्तक के संदेश को विकृत करता है। यह एक स्वर्गीय पदाधिकारी है जो ईश्वर के दरबार में चुनौती लाने के लिए अपनी निर्धारित भूमिका निभा रहा है। वह यही कर रहा है। वह इसे अच्छे से करता है। यह पुस्तक के लिए एक दृश्य तैयार करता है।

और इसलिए, हम यह पता लगाने के लिए आगे बढ़ते हैं कि क्या अय्यूब की धार्मिकता परीक्षा में खरी उतरेगी। याद रखें, अय्यूब की धार्मिकता की क्षमता को परखने का एकमात्र तरीका कष्ट उठाना है। और इसलिए, पीड़ा एक ऐसा रास्ता है जिस पर किताब चलने जा रही है।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 9, स्वर्ग में दृश्य, भाग 1 है।
[12:30]